1 याद तुम्हारी आती है

सुबह-सुबह जब चिड़ियाँ उठकर,
कुछ गीत खुशी के गाती हैं,
कलियाँ दरवाजे खोल-खोल,
जब दुनिया पर मुस्काती है,
खुशबू की लहरें जब घर से
बाहर आ दौड़ लगाती हैं,
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है।

जब छम-छम बूँदें गिरती हैं,
बिजली चम-चम कर जाती है,
मैदानों में वन-बागों में
जब हरियाली लहराती है,
जब ठंडी-ठंडी हवा कहीं से,
मस्ती ढो कर लाती है,
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है।

–राम नरेश त्रिपाठी

© RBSEBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ:

खुशबू – सुगंध सिरजनहार – बनाने वाला

2 चार मित्र

एक घने जंगल में एक झील थी। उसके किनारे चार मित्र रहते थे। छोटा-सा भूरा चूहा, काला-कलूटा कौवा, कछुआ और हिरण। चारों मित्र हिलमिल कर सुख से रहते थे।

एक शाम चूहा, कौवा और कछुआ झील के किनारे बैठे-बैठे चौथे मित्र हिरण का इंतज़ार कर रहे थे। घंटों बीत गए पर हिरण नहीं आया।

"लगता है, हमारा मित्र किसी मुसीबत में फँस गया है" चूहे ने चिंतित होकर कहा।

"हाँ," कौवे ने कहा, "हो सकता है उसे किसी शिकारी ने पकड़ लिया हो।" कछुए ने कौवे से कहा "तुम उड़कर चारों तरफ देखते हुए हिरण का पता लगा सकते हो।" मैं देखकर आता हूँ।

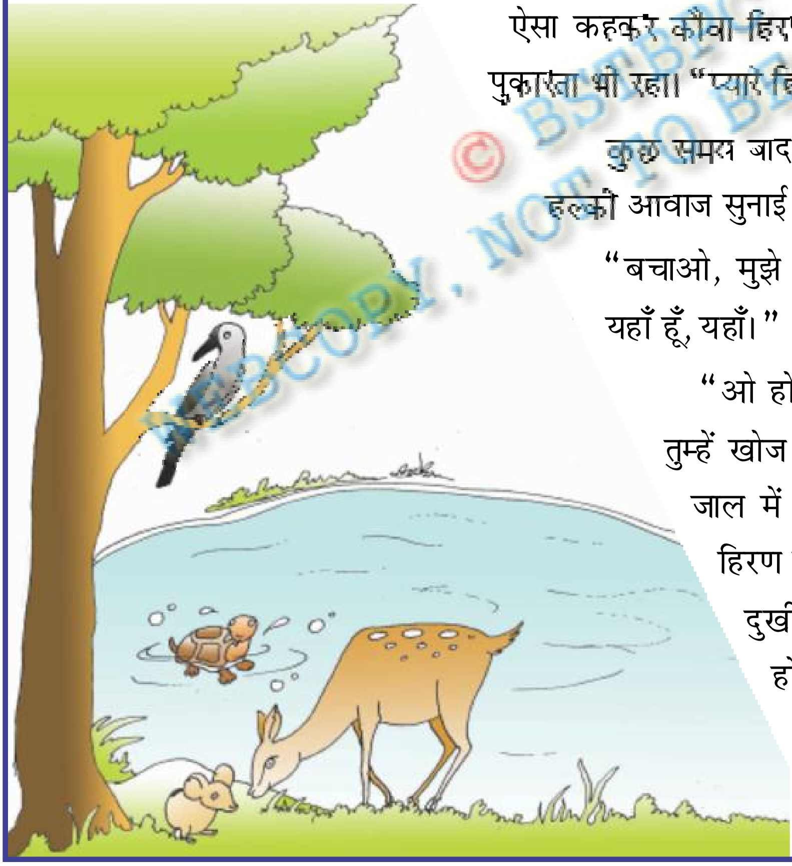

ऐसा कहकर कौवा हिरण की खोज में उड़ चला। हिरण को पुकारता भी रहा। "प्यारे हिरण तुम कहाँ हो? तुम कहाँ हो?"

कुछ समय बाद उसे अपनी पुकार के जवाब में एक हल्की आवाज सुनाई दी। वह हिरण की आवाज थी।

"बचाओ, मुझे बचाओ," हिरण कह रहा था, "मैं यहाँ हूँ, यहाँ।"

"ओ हो, तो तुम यहाँ हो? मैं न जाने कब से तुम्हें खोज रहा हूँ।" कौवे ने कहा। हिरण एक जाल में फँसा हुआ था। अपने दोस्त को देख हिरण की आँखों में आँसू भर आए। कौवे ने दुखी होकर कहा, "तुम तो जाल में फँसे हो। अच्छा ठहरो, मैं तुम्हारी मदद के लिए दोस्त चूहे के पास जाता हूँ और उसे लेकर वापस आता हूँ।"

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

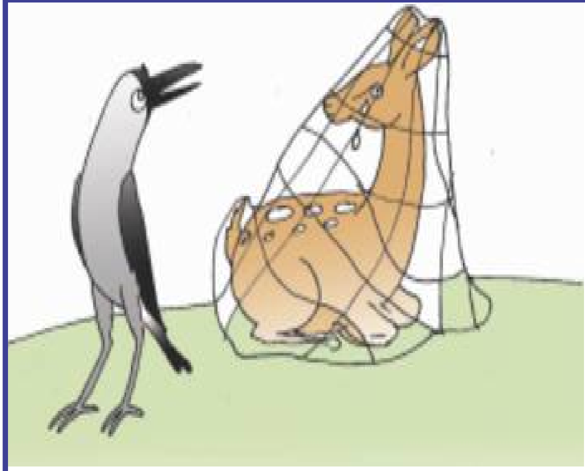

कौवा फुर्ती से उड़ता हुआ झील के पास लौट आया। कौवे ने हिरण को खोज निकालने और उसके जाल में फँसे होने की सारी कहानी अपने मित्रों से कह सुनाई।

इस पर कछुए ने झटपट एक उपाय सोच निकाला। साथ ही उसने कहा, "चिंता की कोई बात नहीं। चूहा जाल काटकर हिरण को आजाद करा सकता है। "हाँ, क्यों नहीं" चूहे ने कहा, "लेकिन मैं उसके पास जाऊँगा कैसे?"

"यह भी कोई बात है?" कौवे ने कहा, "मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बैठाकर ले चलूँगा।"

"तो आओ चलें," चूहे ने कहा और उचककर कौवे की पीठ पर बैठ गया। चूहे को लेकर कौवा उड़ा और थोड़ी ही देर में हिरण के पास जा पहुँचा। चूहे ने जाल काटकर हिरण को आजाद कर दिया। इसी बीच कछुआ भी वहीं आ पहुँचा।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

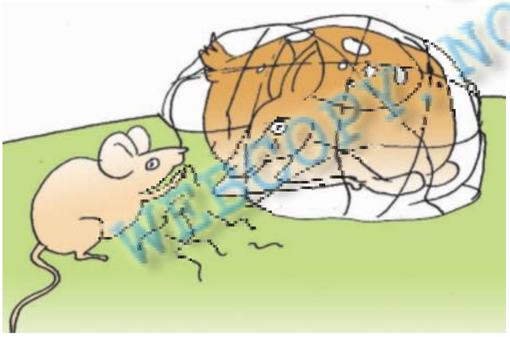

कछुए को देखकर चूहे ने कहा "तुम्हें यहाँ देखकर हमें अच्छा लगा किन्तु यह बात ठीक नहीं हुई। शिकारी के आने से हमलोग मुसीबत में पड़ सकते हैं।" अचानक किसी के आने की आहट सुनकर चारों चुप हो गए। उन्होंने देखा सामने से शिकारी चला आ रहा है।

शिकारी पर नज़र पड़ते ही कौवा उड़कर एक ऊँचे पेड़ की डाल पर जा बैठा। चूहा एक बिल में जा छिपा और हिरण चौकड़ी भरता हुआ पलभर में गायब हो गया। लेकिन कछुआ बेचारा क्या करता? वह जैसे-तैसे एक झाड़ी की ओर रेंगने लगा।

शिकारी जाल खाली देख भौंचक रह गया। वह चकित होकर इधर-उधर देखने लगा। अचानक

उसकी निगाह झाड़ी की ओर रेंगते हुए कछुए पर पड़ी। उसने लपककर कछुए को पकड़ा और घास के फंदे में लपेट धनुष पर लटकाकर घर की ओर चल दिया। पेड़ पर बैठा हुआ कौवा सारी घटना को देख रहा था। उसने अपने दोस्तों को पुकारा और सारी बात बताई। अरे कौवे भाई, हिरण भाई अब क्या किया जाए? चूहे ने कहा, ''कछुए को आजाद कैसे कराया जाए?''

कौवे ने कहा, "हमें क्या करना है, यह मैं बताता हूँ। शिकारी के रास्ते में किसी तलैया के किनारे हिरण बेहोश होकर पड़ जाए। मैं उसके माथे पर बैठकर चोंच मारूँगा। इससे शिकारी हिरण को मरा हुआ समझेगा। फिर तो वह कछुए को छोड़ हिरण के लिए दौड़ेगा। उसी बीच चूहा घास का फंदा काट देगा और कछुआ आजाद हो जाएगा।'' "मान लें कहीं उसने हिरण को पकड़ लिया तो?" चूहे ने पूछा। "अरे नहीं। तुम चिंता न करो। मैं इतना तेज दौड़ूँगा कि उसे नानी याद आ जाएगी।" हिरण ने कहा ।

हिरण शिकारी के रास्ते में जाकर आराम से पड़ गया।

"हिरण!" उसे देखते ही शिकारी खुश होते हुए सोचा, "कितना मोटा-ताजा हिरण।" उसने धनुष को जमीन पर रखा और हिरण की ओर दौड़ा। उसी समय चूहा फुर्ती से आया और घास के फंदे को काटकर कछुए को आजाद कर दिया। कछुआ पास की तलैया में घुस गया। उधर हिरण ऐसा दौड़ा कि शिकारी उसकी दुम भी न पकड़ सका।

वह खाली हाथ धनुष के पास लौट आया।

"यह क्या?" वह चीखा, "कछुआ नदारद!''

इतना सुस्त जानवर कैसे भागा होगा? आज तो दिन ही खराब है।" पछताता हुआ शिकारी घर की ओर चल पड़ा।

BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

कौआ, हिरण, चूहा और कछुआ छिपे-छिपे शिकारी को देख रहे थे। जब वह चला गया तो वे सब ठाठ से बाहर निकल आए। फिर चारों मित्र चल दिए झील की ओर।

–विष्णु शर्मा (पंचतंत्र)

(विष्णु प्रभाकर द्वारा संपादित एवं प्रकाशन विभाग भारत सरकार द्वारा प्रकाशित "सरल पंचतंत्र" का संक्षिप्त रूप)

शब्दार्थ

शिकारी – शिकार करने वाला

चौकड़ी भरना – कूदते-फाँदते हुए दौड़ना

दुम – पूँछ

नदारद – गायब

भौंचक रहना – हैरान होना

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

कहानी में से

1. बताइए, बाकी तीनों मित्रों में से किसने क्या किया जब –

   (क) शिकारी ने हिरण को पकड़ा

   (ख) शिकारी ने कछुए को पकड़ा

2. शिकारी क्या काम करता है?

3. अपने मित्र को देखकर जाल में फँसे हिरण की आँखों में आँसू क्यों आ गए?

कैसा दिन ?

"आज तो दिन ही खराब है," शिकारी ने सोचा जब उसके हाथ कोई शिकार नहीं लगा। आपके लिए स्कूल में अच्छा दिन कब होता है और कौन-सा दिन बुरा होता है?

क्या होता अगर

1. कौवे को हिरण दिखाई न देता।

2. चूहे से घास का फंदा न कटता।

कौवे की बात

"कौवे ने हिरण को खोज निकालने और उसके जाल में फँसे होने की सारी कहानी अपने मित्रों से कह सुनाई।" उसने क्या-क्या बताया होगा? लिखिए।

मित्रता

1. चारों मित्र मिलकर क्या करते होंगे? अपनी कल्पना से बताइए।
2. आपको अपने दोस्तों की जरूरत कब-कब पड़ती है?
3. ऐसे कौन-कौन से काम हैं जो आप अपने दोस्तों के साथ करना पसंद करते हैं?

आपकी कहानी

मान लीजिए शिकारी दूसरी बार भी हिरण को पकड़ लेता, फिर कहानी आगे कैसे बढ़ती? अपने मन से कहानी लिखिए।

कुछ मजे के लिए

यह कहानी पंचतंत्र नाम की किताब से ली गई है। इस किताब में और भी कई मजेदार कहानियाँ हैं। इस किताब में से और कहानियाँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सबसे ज़्यादा

इस कहानी में कौन सबसे

- तेज़ ....
- बहादुर ....
- समझदार ....
- लालची ....
- मूर्ख ....
- मिलनसार ....

3 घर प्यारा

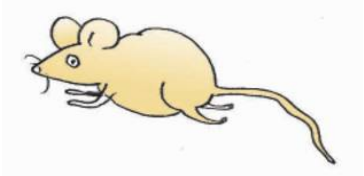

सदा यही तो कहती हो माँ
घर यह सिर्फ हमारा अपना।
लेकिन माँ कैसे मैं मानूँ
घर तो यह कितनों का अपना।
देखो तो कैसे ये चूहे
खेल रहे हैं पकड़म-पकड़ी।
कैसे मच्छर टहल रहे हैं
कैसे मस्त पड़ी है मकड़ी।

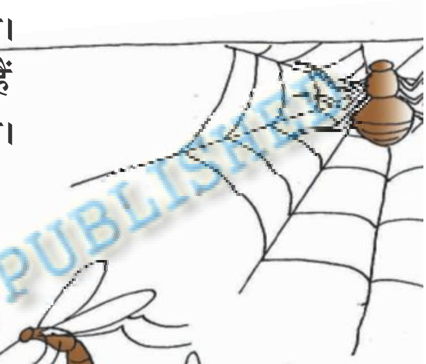

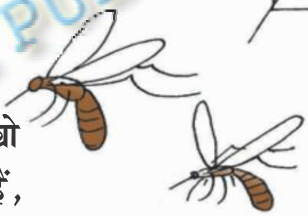

और छिपकली को तो देखो
चलती है जो गश्त लगाती।
अरे कतारें बाँधे-बाँधे
कहाँ चींटियाँ दौड़ी जातीं।
और उधर आँगन में देखो
पंछी कैसे झपट रहे हैं,
बिल्कुल दीदी और मुझ जैसे
किसी बात पर झगड़ रहे हैं।

और यह देखो तिलचट्टे भी
दिन रात क्या यहीं ना रहते।
क्यों रहते ये इस घर में जो
इसे ना अपना घर समझते।
इसीलिए तो कहता हूँ माँ
घर ना समझो सिर्फ हमारा।
सदा-सदा से जो भी रहता
सबका ही है घर यह प्यारा।

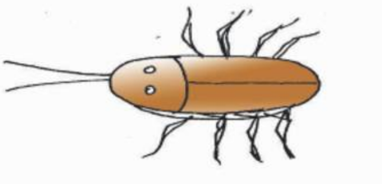

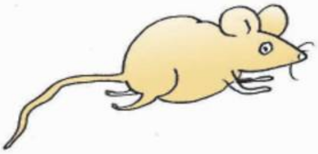

–दिविक रमेश

BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ :

गश्त लगाना - घूमना

अभ्यास

कविता में से

1. कविता के अनुसार घर में कौन-कौन से जीव-जंतु रहते हैं?
2. चूहे घर में क्या कर रहे हैं?
3. पक्षी किसकी तरह लड़ रहे हैं?
4. **कविता में घर को किसका घर कहा गया है?**

   बताएँ, आपके घर में मकड़ी, चूहा, तिलचट्टा, छिपकली, चींटी कहाँ रहती हैं? उनमें से किसी एक का चित्र बनाकर उसके बारे में कुछ बताइए। ध्यान रहे, कहीं कुछ छूट न जाए!

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अनुमान लगाइए

1. आपको कैसे पता चलता है कि घर में

   चूहे हैं .... पक्षी हैं ....

   मकड़ियाँ हैं .... मच्छर हैं ....
2. चींटियाँ कतार बाँधकर कहाँ जाती होंगी?
3. छिपकली गश्त क्यों लगा रही होगी?

4. तिलचट्टे घर में कहाँ रहते होंगे?

5. पक्षी किस चीज पर झपट रहे होंगे?

बातचीत के लिए

1. घर में चींटियाँ, मच्छर और चूहे क्या हानि पहुँचाते हैं?

2. क्या चूहे हमेशा नुकसान पहुँचाते हैं?क्या इनसे कोई फायदा भी है? घर के सदस्यों से पता कीजिए।

3. बच्चा जीव-जंतुओं को उनका घर मानने के लिए क्या कारण बताता है?

4. आपके घर में कौन-कौन रहते हैं? परिवार के सदस्यों के नाम लिखिए।

5. अपने घर के बारे में कुछ बताइए ।

तरह-तरह के घर

1. बताइए, इनके घर को क्या कहते हैं?

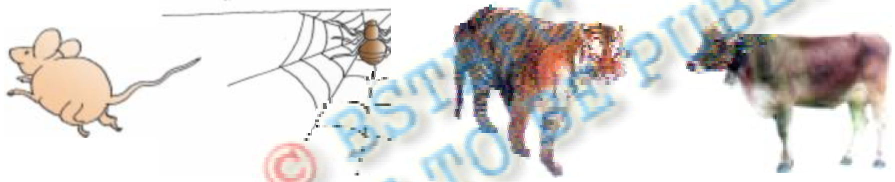

2. पता कीजिए, ये जीव-जंतु कहाँ रहते हैं।

   चींटियाँ, दीमक, मछली, चीता, खरगोश

कतार ही कतार

1. आपने कतार कहाँ-कहाँ देखी है?

2. आप कब-कब कतार में खड़े हुए हैं? आपको कतार में खड़ा क्यों किया जाता है? आपको कतार में खड़ा होना कैसा लगता है?

3. 'कतार' के लिए एक और शब्द बताइए।

भाषा की बात

1. उदाहरण की तरह शब्द लिखिए -

   मच्छर - अच्छा ....

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

बच्चा – ....

मस्त – ....

प्यारा – ....

2. उदाहरण की तरह वाक्यों को दूसरे तरीके से लिखिए –

उदाहरण – सबका ही है घर यह प्यारा

यह सबका ही प्यारा घर है।

(क) देखो तो कैसे ये चूहे

खेल रहे हैं पकड़म-पकड़ी

....

(ख) अरे कतारे बाँधे-बाँधे

3. नीचे दिए गए वाक्यों में आए मोटे शब्दों पर ध्यान दीजिए-

मीना ने थैला **पकड़ा**। (पकड़ना)

बच्चे एक- दूसरे से पतंग **छीन** रहे थे। (छीनना)

सुहेल ने गेंद **लपकी** । (लपकना)

बच्चों ने मेज **खींची**। (खींचना)

कौआ रोटी पर **झपट** पड़ा (झपटना)

शिक्षक की सहायता से इन शब्दों पर बातचीत कीजिए ?

4. कविता के लिए दो शीर्षक लिखिए।

आपने ये शीर्षक क्यों चुने? कारण भी बताइए।

....

....

....

....

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

4 बिल्ली का पंजा

एक गाँव था। नाम था उसका कंचनपुर। वह गंगा के किनारे बसा था। गाँव में अनेक तरह के काम-धाम करने वाले लोग रहते थे। वहीं चार व्यापारी भी रहते थे। चारों गहरे मित्र थे। चारों में से एक का नाम गंगाधर था। दूसरे का नाम लीलाधर था। तीसरे का मुकेश और चौथे का नाम संजय था। चारों रूई का व्यापार करते थे।

एक बार उनके गोदाम में बहुत से चूहे रहने लगे। चूहे रोज़-रोज़ रूई को खराब करने लगे। तब चारों मित्रों ने मिलकर सलाह की।

गंगाधर बोला – "मित्रो! चूहे बहुत तंग करते हैं।

मुकेश बोला – "चूहों को पकड़ना चाहिए। इसके लिए कुछ पिंजरे खरीद लो।"

तभी लीलाधर ने कहा – "गोदाम में चूहे मारने की दवा रख देनी चाहिए।"

आखिर में संजय बोला – " भाइयो! मेरी मानो तो एक बिल्ली पाल लो। वह चूहों को खाती रहेगी। हमें बार-बार कुछ खरीदना भी नहीं पड़ेगा।"

संजय की बात सबको ठीक लगी।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

बस उन्होंने एक बिल्ली पाल ली। बिल्ली साझे की थी। चारों ने उसका एक-एक पंजा ले लिया। गंगाधर ने आगे का दायाँ पंजा लिया। लीलाधर ने आगे का बायाँ पंजा लिया। मुकेश ने पीछे का

दायाँ तथा संजय ने पीछे का बायाँ पंजा लिया। सब अपने अपने पंजों की देखभाल करने लगे।

अब बिल्ली गोदाम में रहने लगी थी। चूहों में कमी आने लगी थी। चारों मित्र खुश थे। तभी बिल्ली के आगे वाले दाएँ पंजे में खाज हो गई। यह पंजा गंगाधर का था। गंगाधर ने घासलेट का तेल लिया। थोड़ी रूई भी ली। रूई को घासलेट के तेल में भिगोया और पट्टी बनाकर पंजा पर बाँध दिया। गंगाधर ने सोचा इससे खाज ठीक हो जाएगी।

रात में बिल्ली एक चूहे के पीछे भागी। पास ही एक दीपक जल रहा था। चूहा दीपक के पास

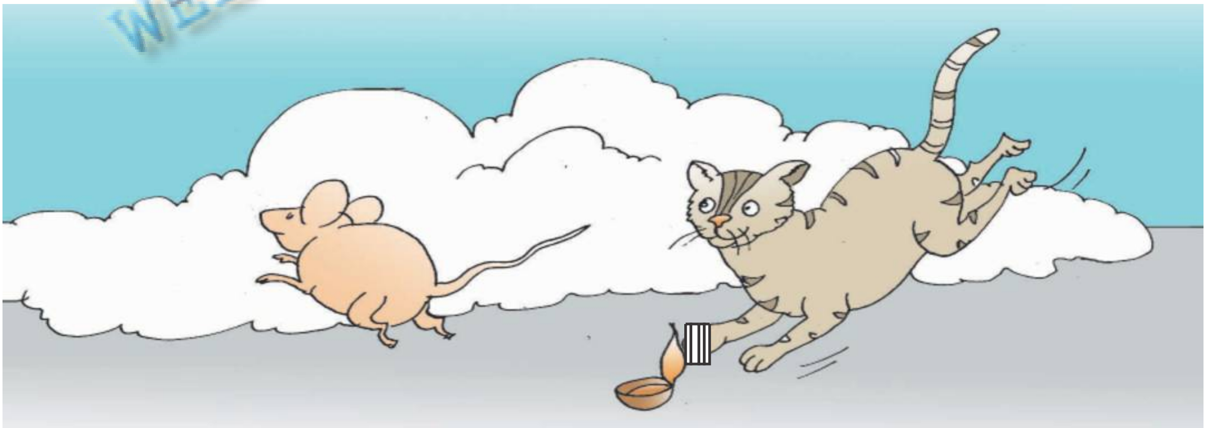

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

से भागा। बिल्ली भी पीछे भागी। तभी बिल्ली का पंजा दीपक की लौ से छू गया। पंजे में आग लग गई।

बिल्ली बचने के लिए इधर-उधर भागने लगी। भागम-भाग में गोदाम में आग लग गई। बिल्ली घबराकर बाहर भागी। उसे गंगाधर ने बचा लिया। पर गोदाम की सारी रूई जल गई।

गंगाधर, लीलाधर, मुकेश और संजय आपस में झगड़ने लगे। वे एक दूसरे को दोष देने लगे। आखिर में लीलाधर, मुकेश और संजय एक तरफ हो गए। वे कहने लगे गंगाधर के पंजे से आग लगी है इसलिए गंगाधर ही दोषी है। सारा नुकसान उसे ही भरना चाहिए।

पर गंगाधर नहीं माना।

चारों लड़ते-झगड़ते पंचायत में पहुँचे। पंचों ने सब की बात सुनी। फिर फैसला सुनाया - गंगाधर के पंजे में आग लगी। पर वह पंजा अकेला तो भाग नहीं सकता था। बाकी तीनों पंजे उसे लेकर भागे। ये तीनों पंजे भागते नहीं तो आग भी नहीं लगती। ये भागने वाले पंजे तो लीलाधर, मुकेश और संजय के थे। इसलिए नुकसान की भरपाई भी ये तीनों ही करेंगे। गंगाधर को नुकसान की भरपाई नहीं करनी है।

फैसले से गंगाधर बहुत खुश था।

-साभार 'दिगन्तर' (राजस्थान)

© RSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

व्यापारी - व्यवसाय (बिजनेस) करने वाला **खाज** - खुजली जैसी बीमारी

घासलेट - मिट्टी तेल, किरासन तेल **दीपक** - दीया **नुकसान** - घाटा, हानि।

अभ्यास

कहानी में से

1. चारों मित्रों ने बिल्ली क्यों पाली?
2. चारों मित्र पंचायत में क्यों पहुँचे?
3. तीनों मित्रों को नुकसान की भरपाई क्यों करनी पड़ी?

आपके विचार से

1. आपके विचार से पंचायत ने सही फैसला किया या गलत? अपने उत्तर के कारण भी बताइए।
2. क्या चारों ने चूहों की समस्या का सही हल सोचा था?अपने उत्तर के कारण भी बताइए।
3. अगर आप उन चारों के साथ होते तो चूहों से छुटकारा पाने के लिए क्या उपाय करते ?

व्यापार

चारों मित्र रूई का व्यापार करते थे।

1. व्यापार क्या होता है?
2. व्यापार करने वाले को क्या कहते हैं?
3. आपके मोहल्ले या गाँव में भी अनेक लोग व्यापार करते होंगे? वे कौन-कौन से व्यापार करते हैं?

BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

लड़ाई के कारण

1. चारों बहुत पुराने और गहरे मित्र थे। फिर उनमें इतनी जल्दी लड़ाई क्यों हो गई?आपस में बातचीत करके पता लगाइए।
2. आपकी अपने मित्रों से किन बातों पर अनबन होती है? फिर सुलह कैसे होती है?

   इस कहानी में कोई एक व्यक्ति या वस्तु हटा दें ताकि चारों मित्रों में लड़ाई न हो।

घर के प्राणी

1. घर में रहने वाले वैसे जीव-जन्तुओं की सूची बनाएँ जिनसे आप छुटकारा पाना चाहते हैं?
2. उनसे छुटकारा पाने के लिए वे क्या करते हैं?

रूई

1. रूई किस-किस काम में आती है?
2. क्या आप धुनिया के बारे में जानते हैं? वे क्या काम करते हैं? क्या उनकी जगह किसी और ने ले ली है?

भाषा की बात

1. रूई शब्द में 'र' के साथ 'ऊ' की मात्रा लगी है। कभी-कभी 'र' के साथ 'उ' की मात्रा भी लगाई जाती है। दोनों मात्राओं की आवाज़ और लिखने के तरीके में अंतर होता है। कई बार जल्दबाजी में हमारा ध्यान इस अंतर पर नहीं जा पाता।

2. नीचे लिखे शब्दों में 'उ' या 'ऊ' की मात्रा लगाइए -

र + उ = रु   पुरुष

र + ऊ = रू   रूई

र + पया   र स्तम   बार द

शुर   मार   अमर द   गुर

जर र तर

3. चूहे-बिल्ली पर लिखी कविता को पूरा करें।

आगे-चूहा पीछे बिल्ली

उड़ा रही थी उसकी खिल्ली

....

....

....

....

❖

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

5 ?kk?k HkM~Mjh

1. उत्तर चमके बीजुरी, पूरब बहती बाउ।
घाघ कहै सुन भड्डरी, बरधा भीतर लाउ।।

(जब उत्तर की दिशा में बिजली चमकती हो और पूरब की वायु बहती हो, तो घाघ कहते हैं कि हे भड्डरी ! सुनो, बैलों को घर के अन्दर ले आ, वर्षा अवश्य होगी।)

2. औआ बौआ बहै बतास।
तब होवे बरखा कै आस।।

(अगर वर्षा ऋतु में कभी इधर, कभी उधर, कभी तेज, कभी मंद, अनिश्चित हवाएँ चलने लगें, तो जानो कि पानी अवश्य बरसेगा।)

3. लाल पियर जब होय अकास।
तब नाहीं बरखा की आस।।

(आकाश लाल पीला होने लगे, तब वर्षा की आशा नहीं है।)

4. रात निबद्दर दिन को छाया।
कहैं घाघ अब बरखा गया।।

(जब रात्रि में बादल न हो और दिन में बादलों की छाया हो तो घाघ कहते हैं कि अब वर्षा चली गयी।)

5. उल्टे गिरगिट ऊँचे चढ़े।
बरखा होई भूइँ जल बढ़े।

(जब गिरगिट उलटा होकर ऊपर की ओर चढ़े तो समझो कि वर्षा होगी और पृथ्वी पर जल बढ़ेगा।)

6. अगहन बरसे हून, पूस बरसे दून।
माघ बरसे सवाई, फागुन बरसे मूर गँवाई।।

(यदि अगहन में वर्षा हो तो फसल अच्छी होती है और पूस में वर्षा हो तो दूनी फसल होगी और माघ में वर्षा होने से सवाई पैदावार होती है। परन्तु वर्षा यदि फागुन के महीने में होती है तो बीज भी नहीं मिलता।)

–घाघ

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED ©JSTBPC

6 सेर को सवा सेर

एक गाँव में तीन भाई रहते थे। गप्प हाँकने में उनका जवाब नहीं था। इस काम में तीनों भाई अपने को सबका गुरु समझते थे। एक बार तीनों भाई यात्रा पर निकले। रास्ते में वे एक सराय में ठहरे। उसी सराय में एक राजकुमार भी आ ठहरा। उसने कीमती वस्त्र तथा बहुमूल्य आभूषण पहन रखे थे। भाइयों ने राजकुमार को अपने जाल में फँसाकर उसके वस्त्र-आभूषण हथियाने की योजना बनाई।

उनमें से एक भाई राजकुमार से बोला – "महाशय, समय काटने के लिए कुछ खेल-पहेली हो जाए तो कैसा रहेगा?"

राजकुमार राजी हो गया। दूसरे भाई ने सुझाया – ''ऐसा करते हैं कि हम बारी-बारी से गप्पें हाँकते हैं। किसी की गप्प पर दूसरा कोई विश्वास न करे तो विश्वास न करने वाला हारा माना जाए। उसे गप्प कहने वाले की गुलामी करनी पड़ेगी।''

राजकुमार यह शर्त भी मान गया।

गपोड़ी बहुत खुश हुए। उन्हें पूरा विश्वास था कि वे ऐसी बेतुकी गप्प मारेंगे कि राजकुमार को विश्वास न करने पर मजबूर करेंगे। उसके मुँह से-''यह कैसे हो सकता है,'' निकलवाकर रहेंगे।

उन्होंने सराय के मालिक को पंच बनने के लिए मना लिया। मुकाबला शुरू हुआ।

पहले भाई ने गप्प मारी-''बचपन में हम लुकाछिपी खेल रहे थे। मैं छिपने के लिए एक ताड़ के पेड़ पर चढ़ गया। वह ताड़ का पेड़ कम से कम सौ मील ऊँचा था। मैं दौड़कर उसकी चोटी के पत्तों के बीच छिपकर बैठ गया। मुझे वहीं नींद आ गई। जब आँख खुली तो देखा कि पेड़ इस बीच पचास मील और उग

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

चुका था। नीचे उतरने की हिम्मत नहीं हुई। मैं सोच ही रह था कि पास से एक बादल का टुकड़ा गुजरा। मैं उसी में घुस गया। जब उस बादल से पानी बरसने लगा तब जाकर मैं पानी की धार को रस्सी की तरह पकड़कर नीचे उतरा।'' राजकुमार केवल मुस्कराया। पहला भाई निराश हो गया। उसे पूरा यकीन था कि राजकुमार विश्वास नहीं करेगा। दूसरा गपोड़ी भाई बोला–''एक बार मेरी गेंद एक झाड़ी में जा गिरी। मैं अपनी गेंद ढूँढ़ने झाड़ियों में घुसा लेकिन मुझे अपनी गेंद कहीं नजर नहीं आई। एक चूहे का बिल मुझे दिखा। मैं उसके भीतर चला गया तो क्या देखता हूँ कि वहाँ सैकड़ों हाथी बँधे पड़े हैं। उस बिल में रहने वाला चूहा हाथीचोर था। मैंने उन हाथियों को मुक्त कराने का फैसला कर लिया। और तो कोई तरीका नहीं था सिवा हाथियों को पकड़कर अपनी जेबों में भरने के। सारे हाथी जेबों में आ गए तो मैं बाहर की ओर भागा। तभी हाथीचोर चूहे ने मुझे देख लिया। वह तलवार लेकर मेरे पीछे आया। बिल से बाहर आकर चूहे से बचने के लिए उछलकर एक टिड्डे की पीठ पर सवार हो गया और उसे एक चाबुक मारी टिड्डे ने आठ दस लंबी लंबी छलाँगें मारी और चूहा हाथ मलता रह गया।''

राजकुमार ने सहमति के लिए सिर हिलाया–''हाँ, मैंने भी तुम्हें टिड्डे पर जाते देखा था।'' दूसरा भाई भी असफल हो गया। अब बारी तीसरे भाई की थी। वह बोला–''एक बार मैं नदी किनारे घूमने गया। वहाँ सारे मछुआरे इकट्ठे होकर रो रहे थे। मैंने कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि नदी में एक भी मछली नहीं रही। वे भूखों मर रहे हैं।

मैं इसका कारण जानने नदी में उतरा। पानी के भीतर मैं क्या देखता हूँ कि एक व्हेल सारी मछलियों को खा रही है। उसे देखकर मुझे इतना गुस्सा आया कि मेरे गुस्से की गर्मी से नदी का पानी गर्म होने लगा। पानी गर्म होने से व्हेल छटपटाने लगी और पानी से ऊपर आकर हवा में उड़ गई। उसके उड़ने से पहले ही मैंने उसकी पूँछ पकड़ ली। हम दोनों हवा में उड़ने लगे। व्हेल ने पूँछ झटककर मुझे गिराने की कोशिश की पर मैंने पूँछ नहीं छोड़ी। तभी मुझे एक बहुत बड़ी चट्टान हवा में तैरती नजर आई। मैंने अपने पैर उसपर टिकाए और पूँछ से पकड़कर व्हेल

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

को खूब घुमाकर समुद्र की ओर फेंक दिया। इस प्रकार मैंने उस व्हेल से मछुआरों को निजात दिलाई।''

राजकुमार ने ताली बजाई- ''तुमने बहुत बहादुरी का काम किया।''

तीनों भाई असफल हो गए थे। उनके मुँह उतर गए। पंच ने कहा- ''राजकुमार, अब तुम अपनी गप्प सुनाओ।''

राजकुमार ने कहा- ''ठीक है। अब मेरी कहानी सुनो। मैं एक देश का राजकुमार हूँ। मेरे पास तीन गुलाम हैं। एक दिन वे तीनों मुझे धोखा देकर भाग निकले। तब से मैं घूम-घूमकर उन्हें तलाश करता फिर रहा हूँ। आज फिर वे मुझे मिल गए।''

एक भाई ने पूछा- ''कौन हैं वे?''

राजकुमार मुस्कराया-''तुम तीनों ही तो वे गुलाम हो।''

अब तीनों भाई फँस गए। अगर राजकुमार की बात नहीं मानते तो शर्त हार जाते हैं और राजकुमार के गुलाम बन जाते हैं। अगर राजकुमार की गप्प स्वीकार करते हैं तो गुलाम हैं ही।

पंच ने निर्णय दिया कि तीनों भाई हार गए हैं और वे अब राजकुमार के गुलाम होंगे। वे बहुत सिटपिटाए। राजकुमार से माफ़ी माँगने लगे। अंत में राजकुमार ने कहा-''मैं तुम्हें एक शर्त पर मुक्त करता हूँ। वह यह कि आगे से उलूल-जलूल बातें बनाकर गाँव वालों को न ठगना।''

गपोड़ी भाइयों को वचन देना पड़ा।

© BSTBPC WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

बातचीत के लिए -

1. गप्प मारने वाले को क्या कहा जाता है?
2. 'सराय' किसे कहते हैं? सराय और घर में क्या अंतर होता है?
3. इस कहानी में सवा सेर कौन है?
4. तीनों भाइयों ने राजकुमार के सामान को हथियाने की क्या योजना बनाई?
5. ताड़ का पेड़ कितना ऊँचा होता होगा? क्या आप उस पर चढ़ सकते हैं?

पाठ में से

1. पहले भाई ने क्या गप्प सुनाई?
2. दूसरे भाई ने हाथियों को कैसे मुक्त कराया?
3. नदी का पानी गर्म क्यों होने लगा?
4. राजकुमार ने ऐसा क्या कहा कि तीनों भाई हार गए?
5. तीनों भाइयों ने राजकुमार को क्या वचन दिया?

गप्प सुनो भई गप्प !

1. गप्प क्या होती है? गप्प मारने और बात करने में क्या अंतर है?
2. आपको कौन-सी गप्प सबसे ज़्यादा पसंद आई और क्यों?
3. अगर आप को गप्प मारने के लिए कहा जाए तो आप क्या गप्प सुनाएँगे?

बताइए, इनमें से कौन-सी बात गप्प है ? '✓' लगाइए -

1. पेड़ पर मछलियाँ घोंसले में रहती थीं। ( )
2. कुत्ता ने गेंद को मुँह में दबा लिया। ( )
3. कछुआ तालाब में अंडे उबालता था। ( )
4. समुद्र के अंदर रंग-बिरंगे पौधे थे। ( )
5. चूहा, हाथी के सूँड से अंदर घुसा और पूँछ से बाहर निकला। ( )
6. चींटी ने हाथी को उठाकर पटक दिया। ( )

अनुमान लगाइए -

1. राजकुमार ने कौन-कौन से बहुमूल्य आभूषण पहने होंगे?
2. सराय के मालिक को पंच क्यों बनाया गया होगा?
3. तीनों भाइयों की गप्प सुनने के बाद राजकुमार केवल मुस्कराया। क्या उसे यह मालूम था कि तीनों भाई उसे ठग रहे हैं?

©BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

भाषा के रंग –

(1) गप्प मारने वाले को गपोड़ी कहा जाता है। बताइए, इन्हें क्या कहा जाता है।

(क) जो बहुत बोलता है – ....

(ख) जो बहुत कम बोलता हो– ....

(ग) जो माँस खाता हो– ....

(घ) जो चित्र बनाता हो– ....

(ङ) जो सच बोलता हो– ....

(2) बहुमूल्य शब्द इस तरह बना है –

बहु + मूल्य– बहुमूल्य

आप भी इसी तरह नए शब्द बनाइए

(क) अ + सफल –

(ख) सु + पुत्र –

(ग) सु + कन्या –

(घ) अन + पढ़–

(ङ) वि + देश –

(च) बे + काम –

(छ) बे + ईमान –

(ज) बे + होश –

(झ) बे + सुधा –

(ट) बे + सहारा –

(3) रेखा खींचकर विपरीत अर्थ वाले शब्दों को मिलाइए –

'क'	'ख'
विश्वास	कायर
गुरु	असहमति
हार	ठंडा
गर्म	जीत
सहमति	आशा
निराशा	शिष्य
बहादुर	अविश्वास

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

(4) नीचे दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

(क) योजना– ....।

(ख) लुकाछिपी– ....।

(ग) विश्वास– ....।

(घ) बहादुरी– ....।

(ङ) शर्त– ....।

खेलों की दुनिया

"बचपन में हम लुकाछिपी खेल रहे थे।"

(क) आप कौन-कौन से खेल खेलते हैं?

(ख) लुकाछिपी का खेल कैसे खेला जाता है?

(ग) ऐसे खेलों के बारे में बताइए जिन्हें खेलते हुए आप कोई गीत भी गाते हैं।

(घ) इन खेल गीतों को गाकर सुनाइए।

अभिनय

(क) "सेर को सवा सेर' कहानी का मंचन करने के लिए कितने पात्रों की ज़रूरत होगी।

(ख) इस कहानी के मंचन में आप कौन-सा चरित्र निभाना पसंद करेंगे और क्यों?

(ग) इस कहानी का मंचन कीजिए।

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

7 सीखो

फूलों से नित हँसना सीखो,
भौंरो से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित,
सीखो शीश झुकाना।

सूरज की किरणों से सीखो
जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो,
सबको गले लगाना।

दीपक से सीखो जितना
हो सके अँधेरा हरना।
पृथ्वी से सीखो प्राणी की
सच्ची सेवा करना।

जलधारा से सीखो आगे,
जीवन-पथ में बढ़ना।
और धुएँ से सीखो हरदम,
ऊँचे पर ही चढ़ना।

– श्रीधर पाठक

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शिक्षक संकेत :

बच्चों को बताइए कि सभी चीजों में कुछ गुण और कुछ दोष होते हैं। हमें उनके गुणों को अपनाना चाहिए।

शब्दार्थ:

नित – प्रतिदिन   **तरु** – पेड़   **शीश** – सिर

हरना – दूर करना   **लता** – बेल

अभ्यास

आइए बातचीत करें

1. आप कैसे सीखते हैं?
2. जब आप कोई नई बात सीखते हैं तो आपको कैसा लगता है?
3. आपको कौन-कौन से काम सीखने में मजा आता है?

पाठ से बताइए

1. हमें जगने और जगाने की सीख किससे मिलती है?
2. दीपक से हमें क्या सीख मिलती है?
3. पृथ्वी से हमें क्या सीख मिलती है?
4. **कविता की पंक्तियों को पूरा कीजिए ।**

(क) ……से नित हँसना सीखो,
……से नित……
तरु की……डालियों से नित
सीखो……झुकाना।

(ख) ……से सीखो आगे,
……पर बढ़ना,
और……से सीखो हरदम,
ऊँचे पर ही……।

WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

5. पाठ में आपको निम्नलिखित की सीख जिससे मिलती है उसे सीख के सामने लिखें।

(क) हमेशा प्रसन्न रहना ....
(ख) सबको प्यार करना ....
(ग) विनयशील बनना ....
(घ) आगे बढ़ते रहना ....
(ङ) सदा ऊपर उठना ....

भाषा की बात

1. नीचे दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले दो-दो शब्द लिखिए

तरु ....
लता ....
जीव ....
पृथ्वी ....
शीश ....

2. नीचे दिए गए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करें।

भौंरा –
किरण –
अँधेरा –
सेवा –
धुआँ –

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

खोजबीन

पाठ में अनेक चीजों से सीख मिलने की बात कही गई है। इनके अलावे आप किन-किन चीजों से क्या-क्या सीख सकते हैं? सूची बनाइए।

नाम	सीख
....	....
....	....
....	....

8 सुनीता की पहिया कुर्सी

सुनीता सुबह सात बजे सोकर उठी। कुछ देर तो वह अपने बिस्तर पर ही बैठी रही। वह सोच रही थी कि आज उसे क्या-क्या काम करने हैं। उसे याद आया कि आज तो बाजार जाना है। सोचते ही उसकी आँखों में चमक आ गई। सुनीता आज पहली बार अकेले बाजार जाने वाली थी।

उसने अपनी टाँगों को हाथ से पकड़ कर खींचा और उन्हें पलंग से नीचे की ओर लटकाया। फिर पलंग का सहारा लेती हुई अपनी पहिया कुर्सी तक बढ़ी। सुनीता चलने-फिरने के लिए पहिया कुर्सी की मदद लेती है। आज वह सभी काम फुर्ती से निपटाना चाहती थी। हालाँकि कपड़े बदलना, जूते पहनना आदि उसके लिए कठिन काम हैं। पर अपने रोज़ाना के काम करने के लिए उसने स्वयं ही कई तरीके ढूँढ़ निकाले हैं।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

आठ बजे तक सुनीता नहा-धो कर तैयार हो गई।

माँ ने मेज़ पर नाश्ता लगा दिया था।

"माँ, अचार की बोतल पकड़ाना", सुनीता ने कहा।

"आलमारी में रखी है, ले लो", माँ ने रसोईघर से जवाब दिया। नाश्ता करते-करते उसने पूछा "माँ, बाज़ार से क्या-क्या लाना है?" "एक किलो चीनी लानी है। पर क्या तुम अकेले सँभाल लोगी?"

"पक्का", सुनीता ने मुस्कुराते हुए कहा।

सुनीता ने माँ से झोला और रुपए लिए। अपनी पहिया कुर्सी पर बैठकर वह बाज़ार की ओर चल दी।

सुनीता को सड़क की जिंदगी देखने में मज़ा आता है। चूँकि आज छुट्टी है इसलिए हर जगह बच्चे खेलते हुए दिखाई दे रहे हैं। सुनीता थोड़ी देर रुक कर उन्हें रस्सी कूदते, गेंद खेलते देखती रही। वह थोड़ी उदास हो गई। वह भी उन बच्चों के साथ खेलना चाहती थी। खेल के मैदान में उसे एक लड़की दिखी, जिसकी माँ उसे वापस लेने के लिए आई थी। दोनों एक-दूसरे को टुकुर-टुकुर देखने लगे।

फिर सुनीता को एक लड़का दिखा। उस बच्चे को बहुत सारे बच्चे "छोटू-छोटू" बुलाकर चिढ़ा रहे थे। उस लड़के का कद बाकी बच्चों से बहुत छोटा था। सुनीता को यह सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगा।

रास्ते में कई लोग सुनीता को देखकर मुस्कुराए, जबकि वह उन्हें जानती तक नहीं थी। पहले तो वह मन ही मन खुश हुई परंतु फिर सोचने लगी, "ये सब लोग मेरी तरफ़ भला इस तरह क्यों देख रहे हैं?" खेल के मैदान वाली छोटी लड़की सुनीता को दोबारा कपड़ों की दुकान के सामने खड़ी मिली। उसकी माँ कुछ कपड़े देख रही थी।

"तुम्हारे पास यह अजीब सी चीज़ क्या है?" उस लड़की ने सुनीता से पूछा।

"यह तो बस एक पहिया कुर्सी है।" सुनीता ने जवाब दिया। मैं इसी के सहारे चलती-फिरती हूँ। यह कहकर सुनीता आगे बढ़ गई।

सुनीता बाज़ार पहुँच गई। दुकान में घुसने के लिए उसे सीढ़ियों पर चढ़ना था। उसके लिए यह कर पाना मुश्किल था। आस-पास के सब लोग जल्दी में थे। किसी ने उसकी तरफ नहीं देखा। अचानक जिस लड़के को 'छोटू' कहकर चिढ़ाया जा रहा था, वह उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

"मैं अमित हूँ" उसने अपना परिचय दिया, "क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद करूँ?

"मेरा नाम सुनीता है," सुनीता ने राहत की साँस ली और मुस्कुराकर बोली, "पीछे के पैडिल को पैर से ज़रा दबाओगे?

"हाँ, हाँ, ज़रूर" कहते हुए अमित ने पहिया-कुर्सी को टेढ़ा करके उसके अगले पहियों को पहली सीढ़ी पर रखा। फिर उसने पिछले पहियों को भी ऊपर चढ़ाया। सुनीता ने अमित को धन्यवाद दिया और कहा, "अब मैं दुकान तक खुद पहुँच सकती हूँ।"

दुकान में पहुँचकर सुनीता ने एक किलो चीनी माँगी। दुकानदार उसे देखकर मुस्कुराया चीनी की

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE REPUBLISHED

थैली पकड़ने के लिए उसने हाथ आगे बढ़ाया ही था कि दुकानदार ने थैली उसकी गोदी में रख दी। सुनीता ने गुस्से से कहा, "मैं भी दूसरों की तरह खुद अपने आप सामान ले सकती हूँ।"

उसे दुकानदार का व्यवहार बिल्कुल अच्छा नहीं लगा । चीनी लेकर सुनीता और अमित बाहर निकले।

"लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि मैं कोई अजीबोग़रीब लड़की हूँ।" सुनीता ने कहा।

"शायद तुम्हारी पहिया कुर्सी के कारण ही ऐसा व्यवहार करते हैं।" अमित ने कहा।

"पर इस कुर्सी में भला ऐसी क्या खास बात है, मैं तो बचपन से ही इस पर बैठकर इसे चलाती हूँ", सुनीता ने कहा।

अमित ने पूछा, "पर तुम इस पर क्यों बैठती हो?"

"मैं पैरों से चल ही नहीं सकती। इस पहिया कुर्सी के पहियों को घुमाकर ही मैं चल-फिर पाती हूँ लेकिन फिर भी मैं दूसरे बच्चों से अलग नहीं हूँ। मैं वे सारे काम कर सकती हूँ जो दूसरे बच्चे कर सकते हैं" सुनीता ने कहा।

अमित ने अपना सिर हाँ में हिलाया और कहा, "मैं भी वे सारे काम कर सकता हूँ जो दूसरे बच्चे कर सकते हैं।

अमित झट से सुनीता की पहिया कुर्सी के पीछे चढ़ गया। फिर दोनों पहिया कुर्सी पर सवार होकर तेज़ी से सड़क पर आगे बढ़े। इस बार भी लोगों ने उन्हें घूरा परंतु अब सुनीता को उनकी परवाह नहीं थी।

–साभार 'रिमझिम'

(एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली)

शब्दार्थ:

व्यवहार – बर्ताव **अजीबोग़रीब** – अनोखा

घूरना – जोर देकर देखना

BSTBPC WEBCOPY...NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

कहानी में से

1. सुनीता सुबह खुश क्यों थी?
2. माँ ने सुनीता को बाज़ार से क्या लाने के लिए कहा?
3. सुनीता को दुकानदार की कौन-सी बात बुरी लगी और क्यों?
4. सुनीता को सब लोग ग़ौर से क्यों देख रहे थे?

बातचीत के लिए

1. सुनीता को सड़क की ज़िंदगी देखने में मज़ा क्यों आता था?
2. अमित को सब छोटू-छोटू कहकर क्यों चिढ़ा रहे थे?
3. सुनीता दुकान में कैसे पहुँची?
4. क्या अमित और सुनीता दोनों बाकी बच्चों से अलग हैं?

मज़ा ही मज़ा

1. **सुनीता को सड़क की ज़िंदगी देखने में मज़ा आता है।**

   आपको किन कामों में मज़ा आता है? तालिका में लिखिए –

   मुझे मज़ा आता है –

   ------------------ में मज़ा आता है ।

   ------------------ में मज़ा आता है ।

   ------------------ में मज़ा आता है ।

2. **बताइए, इन्हें किन चीज़ों में मज़ा आता होगा –**

   मधुमक्खी ------------------

   चिड़िया ------------------

   मछली ------------------

   चींटी ------------------

आपके सवाल

नीचे दिए गए अंश को पढ़कर कोई तीन सवाल बनाइए –

माँ ने मेज पर नाश्ता लगा दिया था।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

"माँ, अचार की बोतल पकड़ाना", सुनीता ने कहा।

"आलमारी में रखी है ले लो।", माँ ने रसोईघर से जवाब दिया।

सुनीता खुद जाकर अचार ले आई।

नाश्ता करते-करते उसने पूछा," माँ बाज़ार से क्या-क्या लाना है?"

"एक किलो चीनी लानी है। पर क्या तुम अकेले सँभाल लोगी?"

"पक्का", सुनीता ने मुस्कुराते हुए कहा।

1. ....
2. ....
3. ....

मैं भी कुछ कर सकती हूँ

1. यदि सुनीता आपके विद्यालय में आए तो उसे किन-किन कामों में परेशानी आएगी?
2. उसे यह परेशानी न हो इसके लिए अपने विद्यालय में आप क्या कुछ बदलाव सुझा सकते हैं?

भाषा की बात

1. पाठ में से तीन-तीन शब्द छाँट कर लिखिए -

- संज्ञा ---------- ---------- ----------
- सर्वनाम ---------- ---------- ----------
- क्रिया ---------- ---------- ----------
- विशेषण ---------- ---------- ----------

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

2. दिए गए उदाहरण की तरह लिखिए -

माता - पिता

काका --------------	सुनार --------------
चाचा --------------	लुहार --------------
मामा --------------	लेखक --------------
लड़का ------------	गायक --------------

3. नीचे दिए गए शब्दों को पढ़िए। इनमें क्या अंतर है-

- साँस - सास
- बाँस - बास
- काँटा - काटा

दिए गए वाक्यों को सही शब्द से पूरा कीजिए -

(क) जंगल में -------------के पेड़ थे। (बास / बाँस)

(ख) सुनीता के पैर में ---------- चुभ गया। (काटा / काँटा)

(ग) सारे हाथी ---------------चले गए? (कहा / कहाँ)

(घ) मधु की ------------------फूलने लगी थी। (सास / साँस)

(ङ) माँ ने -------------आज बारिश आएगी। (कहा / कहाँ)

4. एक-अनेक

1. रेखांकित शब्दों के रूप बदलकर वाक्यों को दोबारा लिखिए -

(क) सुनीता ने माँ से झोला लिया।

सुनीता ने माँ से झोले लिए।

(ख) आलमारी में अचार की बोतल रखी थी।

....

(ग) मेरा जूता भींग गया।

....

(घ) बच्चा मैदान में खेल रहा था।

....

(ङ) चीनी की थैली फट गई।

....

5. शब्द एक अर्थ अनेक

सुनीता **मन** में बहुत खुश हुई।

ट्रक में दो **मन** गेहूँ थे।

पहले वाक्य में **मन** का मतलब **दिल** (हृदय) है। जबकि दूसरे वाक्य में **मन** शब्द **तौल** या वज़न के लिए आया है।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

आप भी ऐसे ही दो-दो अर्थ वाले शब्दों से वाक्य बनाइए -

कल-	आने वाला दिन	....
कल-	बीता हुआ दिन	....
हार-	माला	....
हार-	हारना	....
उत्तर-	एक दिशा	....
उत्तर-	जवाब	....

नाप-तौल

1. सुनीता ने दुकान से एक किलो चीनी खरीदी। बताइए -

- एक किलो में कितने ग्राम होंगे?
- एक ग्राम में कितने मिली ग्राम होंगे?

2. नीचे दी गई चीज़ों को आप कैसे नापेंगे? मिलान करें ।

कपड़ा	किलोग्राम
चावल	मीटर
दूध	लीटर
बच्चे	दर्जन
केले	संख्या

बातचीत के लिए

सुनीता और माँ के बीच हुई बातचीत को आगे बढ़ाइए -

सुनीता- माँ, अचार की बोतल पकड़ाना।

माँ - आलमारी में रखी है ले लो।

सुनीता - माँ, बाज़ार से क्या-क्या लाना है?

माँ -------------

सुनीता -------------

माँ -----------------

सुनीता ---------------

WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

चिट्ठी आई है–

सुनीता के साथ जो हुआ उसके बारे में बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए–

प्रिय

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

9 हमारा आहार

कैसा हो अपना आहार,
आओ मिलकर करें विचार।
चावल, दाल और सब्जी खाओ,
तन में चुस्ती-फुर्ती लाओ।
केवल आलू तुम मत लाना,
भिंडी, परवल, नेनुआ भी खाना।
दूध-दही तुम छककर खाओ,
फल-फूलों के बाग लगाओ।
आम-अमरूद, पपीता खाओ,
केला, बेल भी घर ले आओ।
खरबूज़, तरबूज, ककड़ी, खीरा,
गरमी की हरते हैं पीड़ा।
खूब करो पानी का व्यवहार,
इसकी महिमा अपरम्पार।
भोजन में हो खूब सलाद,
इसका है अपना अन्दाज़।
मूली, टमाटर, गाजर खाना,
पालक को भी भूल न जाना।
भूँजा-सत्तू नियमित खाए,
वैद्य हकीम घर न आए।
पेट से ज्यादा जब कोई खाए,
खाकर वह पीछे पछताए।
ताजा खाना हरदम खाओ,
नहीं बहाना कभी बनाओ।
जब खाते हैं ढंग से खाना,
व्याधि को ना मिले बहाना।
इसीलिए कहता हूँ यार,
आओ मिलकर करें विचार।
ऐसा हो अपना आहार,
खाकर हम ना पड़े बीमार।

– पाठ्यपुस्तक विकास समिति

© WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ:

आहार – खाना

फुर्ती – तेजी

अपरम्पार – काफ़ी, बहुत

व्याधि – रोग।

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. आहार का क्या अर्थ है?
2. आज आप क्या-क्या खाकर आए हैं?
3. आपके यहाँ कौन-कौन सी सब्जी की खेती होती है।

पाठ में से

1. आहार कैसा होना चाहिए?
2. कविता में किन-किन सब्जियों को खाने की बात की गई है?
3. "ताजा खाना हरदम खाओ, नहीं बहाना कभी बनाओ।" इसका क्या मतलब है?
4. भोजन हमारे लिए क्यों आवश्यक है?
5. **यहाँ कविता की जिन पंक्तियों का अर्थ दिया जा रहा है उन्हें कविता में से ढूँढ़कर लिखिए।**

   (क) हमें आम, अमरूद, पपीता, केला, बेल भी खाना चाहिए।

   (ख) हमारा आहार कैसा हो? आइए हमलोग इसपर विचार करें।

   (ग) हमें पानी का खूब उपयोग करना चाहिए इससे बहुत लाभ है।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

भाषा के नियम

1. **समान अर्थ वाले शब्दों को मिलाइए**

आहार	हकीम
सब्जी	हमेशा
व्यवहार	भोजन
वैद्य	तरकारी
हरदम	उपयोग

2. नीचे दी गई पंक्तियों में से संज्ञा और क्रिया शब्द छाँटकर लिखिए-

पंक्तियाँ	संज्ञा	क्रिया
• केवल आलू तुम मत लाना	....	....
• दूध-दही तुम छककर खाओ	....	....
• ताजा खाना हरदम खाओ	....	....
• जब खाते हैं ढंग से खाना	....	....
• केला, बेल भी घर ले आओ	....	....

3. आपके यहाँ किन-किन फलों की चटनी बनाई जाती है?

4. नीचे दी गई तालिका को पूरा कीजिए-

मनपसंद फल	मनपसंद सब्जियाँ	मनपसंद भोजन
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

© BSTBPC
WEBCOPY : NOT TO BE PUBLISHED

कल्पना की उड़ान

यदि फल और सब्जी आपस में बातचीत करने लगें तो उनके बीच क्या बातचीत होगी? लिखिए।

....

....

....

....

....

भाषा की बात में

1. नीचे दिए गए उदाहरण की तरह शब्द-जोड़े बनाइए-

फूल, पीना, डोरी, भात, फुर्ती, चोखा

- **दूध - दही**
- चुस्ती ....
- फल ....
- खाना ....
- लिट्टी ....
- दाल ....

2. **कविता की पंक्तियों को सामान्य वाक्य-रचना में लिखिए-**

उदाहरण- **कैसा हो अपना आहार** **अपना आहार कैसा हो?**

खूब करो पानी का व्यवहार ....

इसका है अपना अंदाज ....

नहीं बहाना कभी बनाओ ....

3. **अपने मित्र को पत्र लिखकर बताइए कि हमें कैसा भोजन करना चाहिए।**

आपकी बात

1. **पता करके बताइए**

(क) किन-किन चीजों को बनाने में आलू का प्रयोग होता है?

(ख) उनमें से आपकी मनपसंद चीज कौन- सी है?

(ग) उस चीज को बनाने का क्या तरीका है?

2. **कविता में जिन सब्जियों की बात की गई है, वे कहाँ उगती हैं।**

जमीन के ऊपर या जमीन के नीचे? लिखिए-

3. **सलाद बनाने में किन-किन चीजों का प्रयोग होता है?**
4. **फल और सब्जियों को खाने से पहले उन्हें अच्छी तरह से धोना क्यों जरूरी है?**
5. **मध्याह्न भोजन में आप क्या-क्या खाते हैं? बताइए।**

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

10 तीन बुद्धिमान

दृश्य-1

(गोपी, हरि और देव नगदहा गाँव के निवासी हैं। वे काम की तलाश में जयपुर नगर की ओर जा रहे हैं। इस समय वे नगर से थोड़ी ही दूरी पर हैं।)

गोपी : मित्रो! हम गाँव से इतनी दूर आ गए लेकिन अभी तक कोई काम नहीं मिला।

हरि : हाँ! एक सप्ताह पहले हम घर से निकले थे। अगर काम नहीं मिला, तो हम सब क्या करेंगे ?

देव : घबराओ मत, हम तीनों जयपुर के राजा के पास जाएँगे। वे हमें कुछ काम ज़रूर देंगे।

गोपी : लेकिन राजदरबार तक पहुँचना कोई सरल काम नहीं है।

हरि : अरे, यह देखो! एक ऊँट इधर से कुछ देर पहले गया है। ज़मीन पर उसके पैरों के निशान दिखाई दे रहे हैं।

देव : चलो, चलते-चलते इनको ध्यान से देखेंगे। यात्रा में थकावट भी नहीं होगी और थोड़ा मनोरंजन भी हो जाएगा।

गोपी : (पैरों के निशान देखकर) इस ऊँट की एक विशेषता मैं बता सकता हूँ।

हरि : मैं भी इसके विषय में कुछ कह सकता हूँ।

देव : (हँसते हुए) मैं तुम दोनों से कुछ कम नहीं हूँ। आओ, इस पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर ऊँट के विषय में बातें करते हैं।

दृश्य-2

(तीनों पेड़ के नीचे बैठ जाते हैं। दूर से एक व्यक्ति भागता हुआ आ रहा है।)

देव : उधर देखो! एक आदमी हमारी ओर आ रहा है। लगता है, उसकी कोई मूल्यवान वस्तु खो गई है, जिसे वह ढूँढ़ रहा है।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गोपी : (उठकर व्यक्ति को देखते हुए) यह एक धनी व्यापारी है। इसने रेशम के वस्त्र पहन रखे हैं। बेचारा बहुत चिंतित है।

व्यापारी : (हाँफते हुए) नमस्कार सज्जनो! मेरा एक ऊँट खो गया है। क्या आप ने उसे कहीं देखा है?

हरि : नमस्कार मित्र क्या आपका ऊँट एक पाँव से लँगड़ा है?

व्यापारी : (प्रसन्न होकर) हाँ-हाँ! आप ठीक कह रहे हैं।

गोपी : क्या वह दाईं आँख से अंधा है?

व्यापारी : हाँ! लेकिन आप को यह सब कैसे पता? आपने अवश्य उसे देखा होगा।

देव : नहीं, हमने उसे देखा नहीं है। मैं आपको यह भी बता सकता हूँ कि उस ऊँट की पूँछ छोटी है।

व्यापारी : अरे! यह भी सच है। ऊँट को देखे बिना आप उसकी सारी विशेषताएँ कैसे जान सकते हैं? मुझे विश्वास नहीं होता। आपने मेरा ऊँट किसी व्यापारी को बेच दिया है। मैं जयपुर के राजा से शिकायत करूँगा। वही इस समस्या का हल निकालेंगे। आप मेरे साथ चलिए।

हरि : हम निर्दोष हैं इसलिए हमें कोई चिंता नहीं। चलिए हमें राजमहल तक ले चलिए।

दृश्य-3

(व्यापारी के संग तीनों मित्र राजदरबार में पहुँचते हैं। राजा सिंहासन पर बैठे हैं। व्यापारी और तीनों मित्र राजा को प्रणाम करते हैं।)

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

सिपाही : महाराज! यह व्यापारी कहता है कि इन तीनों यात्रियों ने रास्ते में इसका ऊँट चुरा लिया। लेकिन ये तीनों मित्र कहते हैं कि इन्होंने ऊँट को देखा तक नहीं। उसके पैरों के निशान देखकर ही उसके विषय में जानकारी प्राप्त की है।

राजा : (मुस्कुराते हुए) यह तो बहुत रोचक घटना है। ऊँट को देखे बिना उसकी विशेषताएँ कैसे ज्ञात हो सकती हैं?

हरि : (प्रणाम करते हुए) महाराज! मैं आपको समझाता हूँ। जब मैंने ऊँट

के पैरों के निशान देखे तो मुझे मिट्टी में केवल तीन पैरों के निशान दिखाई दिए। इस पर मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि ऊँट एक पैर से लँगड़ा है।

राजा : (ताली बजाते हुए) वाह! तुम बहुत बुद्धिमान हो। (गोपी की ओर देखते हुए) अब तुम बताओ कि तुमने क्या देखा?

गोपी : (राजा को प्रणाम करते हुए) महाराज! मैंने देखा कि ऊँट ने केवल बाईं ओर लगे पेड़ों के पत्तों को खाया था। उसने दाईं ओर लगे पत्तों को छुआ तक नहीं। अत: मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वह ऊँट दाईं आँख से अंधा है।

राजा : (प्रसन्न होकर) तुम भी बहुत चतुर हो। (देव से) अब तुम्हारी बारी है।

देव : (प्रणाम करते हुए) महाराज! मैंने ऊँट के पैरों के निशानों के पास रक्त की छोटी-छोटी बूँदें देखीं। मुझे अंदाज था कि उसके एक पैर में घाव है और उस घाव से ही खून की बूंदें गिरी हैं। मक्खियों को पूँछ से नहीं भगा पाने के कारण ही उसका घाव ठीक नहीं हो रहा होगा। वह पूँछ से उन्हें उड़ा देता, तो महाराज, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि ऊँट की पूँछ छोटी है।

राजा : तुम तीनों की बातें सुनकर मुझे विश्वास हो गया है कि तुमने ऊँट को न तो देखा है, न ही चुराया है। तुम बहुत बुद्धिमान हो। अत: मैं तुम तीनों को अपने दरबार में मंत्री पद पर नियुक्त करता हूँ।

तीनों : (प्रसन्नतापूर्वक प्रणाम करते हुए) महाराज की जय हो!

© WBBSE WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. गोपी, हरि और देव किस गाँव के निवासी थे और वे कहाँ जा रहे थे?
2. राजदरबार क्या होता है? वहाँ क्या-क्या होता होगा?
3. तीनों ने ऊँट की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं? ऐसा कहने के पीछे उन्होंने क्या कारण बताएँ?
4. राजा ने तीनों मित्रों को बुद्धिमान माना। क्या आप इससे सहमत हैं?

पाठ से

1. गोपी, हरि और देव जयपुर के राजा के पास क्यों जाना चाहते थे?
2. व्यापारी तीनों मित्रों को लेकर राजदरबार क्यों गया?
3. किस आधार पर गोपी ने कहा कि ऊँट दाईं आँख से नहीं देख पाता है?
4. हरि ने किस आधार पर बताया कि ऊँट एक पैर से लँगड़ा है?
5. तीनों मित्रों ने ऊँट के पैरों के निशान को ध्यान से देखने की बात की। इससे उन्हें क्या लाभ था ?

किसने कहा, किससे कहा ?

निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़कर बताइए कि किसने किससे ये वाक्य कहे :-

1. ''घबराओ मत, हम तीनों जयपुर के राजा के पास जाएँगे।''
   किसने कहा ...., किससे कहा ....
2. ''क्या आपका ऊँट एक पाँव से लँगड़ा है।''
   किसने कहा ...., किससे कहा ....
3. ''हम निर्दोष हैं इसलिए हमें कोई चिंता नहीं''
   किसने कहा ...., किससे कहा ....
4. ''यह व्यापारी कहता है कि इन तीनों यात्रियों ने रास्ते में इसका ऊँट चुरा लिया।''
   किसने कहा ...., किससे कहा ....
5. ''उसने दाईं ओर लगे पत्तों को छुआ तक नहीं।''
   किसने कहा ...., किससे कहा ....

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

आपकी समझ से

1. यदि व्यापारी तीनों मित्रों की शिकायत लेकर राजा के पास नहीं जाता तो क्या वे तीनों राजदरबार पहुँच पाते?
2. गोपी ने यह कैसे अंदाजा लगाया कि वह व्यापारी बहुत धनी है ?
3. अगर ऊँट की बाईं आँख ठीक नहीं होती तो तीनों मित्र उसके बारे में क्या बताते?
4. इस एकांकी के लिए कोई दो शीर्षक सुझाइए।

भाषा के रंग

1. नीचे दिए गए शब्दों के सही रूप लिखिए:-

उँट = ऊँट

सिहासन =	सप्ताह =
निसान =	जमीन =
निस्कर्ष =	विसय =
गाव =	व्यक्तीओं =
चिंतीत =	लँगरा =

2. नीचे लिखे गए विशेषण शब्दों को सही स्थान पर लिखें :-

धनी, रेशमी, लँगड़ा, बहुत, छोटी, मूल्यवान

धनी	व्यापारी		
....	ऊँट	....	वस्तु
....	वस्त्र	....	पूँछ
....	बुद्धिमान		

3. काल

वर्तमान काल	भूतकाल	भविष्यत् काल
वह बहुत चिंतित है	वह बहुत चिंतित था	वह बहुत चिंतित रहेगा।
....	उसने कीमती वस्त्र पहने थे।	....
ऊँट एक पाँव से लँगड़ा है।	....	....
....	....	ऊँट दाईं आँख से अंधा हो जाएगा।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

यह सच है। ....

.... मैं नहीं मानता था। ....

4. नीचे दिए गए वाक्यों को पूरा कीजिए –

(पर, से, की, ने, में, को)

व्यापारी ने मित्रों .... देखा।

तीनों मित्र राजदरबार .... पहुँच गए।

हम घर .... निकले।

व्यापारी .... तीनों मित्रों पर चोरी का आरोप लगाया।

जमीन .... ऊँट के पैरों के निशान दिखाई दे रहे थे।

ऊँट .... पूँछ छोटी थी।

5. राजदरबार – राजा का दरबार इसी तरह दिए गए शब्दों के बारे में लिखिए।

- राजमहल
- राजकुमार
- राजसिंहासन
- राजपुरोहित
- राजमाता
- राजवैद्य

6. नीचे दिए गए वाक्यों को निर्देशानुसार बदलकर लिखिए –

(क) मेरा ऊँट खो गया है। (बहुवचन में)

....

(ख) हम निर्दोष हैं। (एकवचन में)

....

(ग) महाराज! मैं आपको समझाता हूँ। (बहुवचन)

....

(घ) उन्होंने पत्तों को छुआ तक नहीं। (एकवचन में)

....

(ङ) तुम बहुत बुद्धिमान हो। (बहुवचन में)

....

BSTBPC WEBCOPY - NOT TO BE PUBLISHED

7. नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –

- मित्रो! हम गाँव से बहुत दूर आ गए।
- नमस्कार सज्जनो! मेरा एक ऊँट खो गया है।

इन वाक्यों में लोगों को संबोधित करने के लिए विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का उपयोग किया गया है। संबोधन शब्द में बिंदु नहीं लगाया जाता, जैसे– मित्रों, सज्जनों। नीचे दिए गए वाक्यों को सही करके लिखिए –

(क) भाइयों आप मुझे थोड़ी–सी जगह दे दीजिए।

....

(ख) देवियों मैं आपका बहुत आभारी हूँ।

....

(ग) मित्रों क्या आप मेरे साथ हैं ?

....

आपसी संवाद

गोपी ने ऊँट वाली घटना के बारे में अपनी माँ को कैसे बताया होगा? संवाद लिखिए –

....

....

....

....

....

....

....

....

मंचन

तीन बुद्धिमान शीर्षक पाठ का मंचन कीजिए। एकांकी के मंचन में आप गोपी, हरि, देव, व्यापारी और राजा में से क्या बनना पसंद करेंगे और क्यों?

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED